पञ्चम पार्श्व

सामाजिक-संस्थान

सभा का साफल्य और असाफल्य–

विद्धो धर्मो ह्यधर्मेण सभां यत्रोपपद्यते।
न चास्य शल्यं कृन्तन्ति विद्धास्तत्र सभासदः॥
अर्धं हरति वै श्रेष्ठः पादो भवति कर्तृषु।
पादश्चैव सभासत्सु ये न निन्दन्ति निन्दितम्॥
अनेना भवति श्रेष्ठो मुच्यन्ते न सभासदः।
एनो गच्छति कर्तारं निन्दार्हो यत्र निन्द्यते॥

(महा०, सभाप० द्यूतप० अ० 68। 77।79)

जिस सभा में अधर्म अन्याय से धर्म न्याय को दबाया जावे, दोष को दूर न किया जावे तो वहाँ सभासद् मर गए जानो। वह पाप या अपराध आधा सभा के प्रधान के शिर पर, चौथाई पाप करने वालों में और चौथाई उन सभासदों में जायगा जो निन्दित की निन्दा नहीं करते। जिस सभा में निन्दा के योग्य की निन्दा की जाती है वहाँ प्रधान दोष रहित होता है, सभासद् भी दोष से छूट जाते हैं, कर्ता ही पाप का भागी होता है।

शूद्र को भी यज्ञ करने का अधिकार–

चातुर्वर्ण्यस्य कर्माणि चातुर्वर्ण्यं च केवलम्।
असृजत् स हि यज्ञार्थे पूर्वमेव प्रजापतिः॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 48।3)

चारों वर्णों के कर्मों और चारों वर्णों को परमेश्वर ने प्रथम ही यज्ञ के निमित्त सृजे, उत्पन्न किए।

यहाँ चारों वर्णों का नाम यज्ञार्थ आने से शूद्र को भी यज्ञ

Scanned with CamScanner

करने का ब्राह्मणादि की भाँति समान अधिकार है यह सिद्ध है।

शूद्र को भी तप, दान, धर्म और अग्निहोत्र करने का अधिकार–

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्रा ये चाश्रितास्तपे।
दानधर्माग्निना शुद्धास्ते स्वर्गं यान्ति भारत!॥

(महा०, आश्वमेधिकप० अ० 91।37)

जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तप, दान, धर्म और अग्निहोत्र से शुद्ध हैं वे स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

शूद्र को भी वेद पढ़ाना चाहिये तथा शूद्र को भी वेद पढ़ने का अधिकार–

श्रावयेञ्चतुरो वर्णान् कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः।
वेदस्याध्ययनं हीदं तच्च कार्यं महत् स्मृतम्॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 327।48)

चारों वर्णों को वेद पढ़ाना चाहिए, उनमें आगे आसन ब्राह्मण का हो, यह वेद का पढ़ना वेद प्रचार बड़ा भारी कार्य माना गया है।

यहाँ चारों वर्णों को वेद पढ़ाने के आदेश में शूद्र को भी अन्य वर्णों की भाँति वेद पढ़ने का अधिकार है यह सूचित किया है।

शूद्र से भी ज्ञान प्राप्ति करना शूद्र का ज्ञानशिक्षक बनने का अधिकार–

ज्ञानान्मोक्षो जायते राजसिंह! नास्त्यज्ञानादेवमाहुर्नरेन्द्र।
तस्माज्ज्ञानं तत्त्वतोऽन्वेषितव्यं येनात्मानं मोक्षयेज्जन्ममृत्योः॥
प्राप्य ज्ञानं ब्राह्मणात् क्षत्रियाद्वा वैश्याच्छूद्रादपि नीचादभीक्ष्णम्।
श्रद्धातव्यं श्रद्धमानेन नित्यं न श्रद्धिनं जन्ममृत्यु विशेताम्।

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 318।87, 88)

Scanned with CamScanner

पूर्व सीमा के और उत्तरी सीमा के राजा एवं म्लेच्छ राजा भी आये थे।

स्त्रियों के धर्माधिकार तथा उनका सम्मान–

कुन्ती का वानप्रस्थाश्रम ग्रहण–

श्वश्रूश्वशुरयोः पादान् शुश्रूषन्ती वने वने।
गान्धारी सहितो वत्स्ये तापसी मलपङ्किनी॥

(महा०, आश्रमवासिकप० अ० 18।12)

कुन्ती कहती है कि मैं सास और श्वसुर के चरणों की सेवा करती हुई गान्धारी के साथ शरीर शृङ्गार और वस्त्र शोभा से रहित तापसी बनकर रहूँगी।

अम्बा के संन्यास ग्रहण की इच्छा–

प्राव्राज्यहमिच्छामि तपस्तप्स्यामि दुश्चरम्।

(महा०, उद्योगप० आम्बो० अ० 175।41)

अम्बा कहती है कि मैं संन्यास चाहती हूँ, कठिन तप तपूँगी।

सुलभा स्त्री संन्यासिनी–

अथ धर्मयुगे तस्मिन् योगधर्ममनुष्ठिता।
महीमनुचचारैका सुलभा नाम भिक्षुकी॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 320।5-7)

उस धर्मयुग में योगधर्म में निष्णाता सुलभा संन्यासिनी पृथ्वी पर परिभ्रमण कर रही थी।

यहाँ नीलकण्ठ टीकाकार ने भी स्त्री संन्यास को स्वीकार किया है। उनका वचन **"भिक्षुकीत्यनेन स्त्रीणामपि प्राग्विवाहद् वैधव्यादूर्ध्वं वा संन्यासेऽअधिकारोऽस्तीति दर्शितम्"** (नीलकण्ठः) 'भिक्षुकी' इस शब्द से स्त्रियों का भी विवाह से पूर्व अथवा विधवा हो जाने पर संन्यास में अधिकार है यह दिखलाया।

Scanned with CamScanner

राजन्! ज्ञान से मोक्ष होता है अज्ञान से नहीं, ऐसा ऋषि कहते हैं, अतः ज्ञान को यथावत् खोजना चाहिए जिससे अपने को जन्म-मृत्यु से छुड़ा सके। ब्राह्मण से, क्षत्रिय से, वैश्य से, शूद्र से, नीच से भी पुनः पुनः ज्ञान प्राप्त करके शुद्ध भाव से सदा अपनाना चाहिए ज्ञान में श्रद्धावान् को जन्म मृत्यु प्राप्त नहीं होते।

धर्मज्ञ सदाचारी शूद्र भी पूजनीय है–

ज्यायांसमपि शीलेन विहीनं नैव पूजयेत्।
अपि शूद्रं च धर्मज्ञं सद्वृत्तमभिपूजयेत्॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 48।48)

सद्भाव हीन उच्च वर्णस्थ का भी सत्कार न करे किन्तु धर्मज्ञ धार्मिक सदाचारी शूद्र की भी पूजा करे।

अस्पृश्यता (अछूतपना) महाभारत काल में नहीं थी–

शककाम्बोजबाह्लीका यवनाः पारदास्तथा।
कुलिन्दास्तंगणाम्बष्ठाः पैशाचाश्च सबर्बराः॥

(महा०, द्रोणप० जयद्रथवध० 5।14, 121।12-13)

महाभारत युद्ध में शक, काम्बोज, बाह्लीक, यवन, पारद, कुलिन्द, अगस्तंण, अम्बष्ठ देश के राजाओं ने भाग लिया था।

संशप्तका हताः सर्वे काम्बोजाश्च शकैः सह।
म्लेच्छाश्च पार्वतीयाश्च यवना विनिपातिताः॥

(महा०, शल्यप० शल्यवध 9। अ०2।27)

महाभारत युद्ध में संशप्तक, काम्बोज, शक, म्लेच्छ, पार्वतीय यवन मारे गये।

म्लेच्छाश्चार्याश्च राजानः प्राच्योदीच्यास्तथैव च।

(महा०, शान्तिप० राजधर्मानु० अ० 6।7)

कलिङ्ग देश के चित्राङ्गद राजा की कन्या के स्वयंवर में आर्यावर्त के राजा तथा उनके अतिरिक्त

Scanned with CamScanner

तपोवृद्धिर्मया प्राप्ता भवतां स्मरणेन वै।
भवतां च प्रसादेन धर्मान् वक्ष्यामि शाश्वतान्॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 130।3)

मैंने तपोवृद्धि आप लोगों के स्मरण से प्राप्त की, एवं आप जनों के प्रसादार्थ शाश्वत धर्मों का उपदेश करूँगी।

स्त्रियों का सम्मान–

पूज्या लालयितव्याश्च स्त्रियो नित्यं जनाधिप!।
स्त्रियो यत्र हि पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः॥
अपूजिताश्च यत्रैताः सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।
तदा चैतत् कुलं नास्ति यदा शोचन्ति जामयः॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 46।5,6)

राजन्! नित्य स्त्रियाँ सम्मान करने, पूजने योग्य और लालन करने योग्य हैं, जिस परिवार, कुल, समाज, राष्ट्र में स्त्रियाँ पूजी जाती हैं वहाँ देवताओं का, दिव्यगुणों का वास होता है। जिस परिवार, कुल, समाज, या राष्ट्र में स्त्रियाँ निरादृत की जाती हैं वहाँ सब क्रियाएँ फलहीन होती हैं। उस कुल का उस समय नाश समझना चाहिये जब कि स्त्रियाँ शोक में रहती हैं।

मानव जन्म के कारण–

निष्कैवल्येन पापेन तिर्यग्योनिमवाप्नुयान्।
पुण्यपापेन मानुष्यं पुण्येनैकेन देवताः॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष अ० 302।47, 48)

मोक्ष विरोधी पाप से तिर्यक् योनि को प्राप्त होता है, पुण्य पाप से मानव और पुण्य मात्र से देवता होता है।

शुभैर्लभति देवत्वं व्यामिश्रैर्जन्म मानुषम्।
अशुभैश्चाप्यधो जन्म कर्मभिर्लभतेऽवशः॥

शुभ कर्मों से देवत्व को, मिश्रित से मानव जन्म, अशुभ

वैदिक पुस्तकालय

Scanned with CamScanner

क्षत्रिय वंशज स्त्री को भी संन्यास में अधिकार–

नास्मि वर्णोत्तमा जात्या न वैश्या नावरा तथा।
तव राजन्! सवर्णाऽस्मि शुद्धयोनिरविप्लुता।।
प्रधानो नाम राजर्षिर्व्यक्तं ते श्रोत्रमागतः।
कुले चास्य समुत्पन्नां सुलभां नाम विद्धि माम्।।

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 320।80, 81

सुलभा संन्यासिनी ने राजा जनक को उपदेश भी दिया

य इमां पृथिवीं कृत्स्नामेकच्छत्रां प्रशास्तिह।
एकमेव स वै राजा पुरमध्यावसत्युत।।
तत्पुरे चैकमेवास्य गृहं यदधितिष्ठति।
गृहे शयनमप्येकं निशायां यत्र लीयते।
तदनेन प्रसक्तेन फलेनैवेह युज्यते।
गोशतादपि गोक्षीरं प्रस्थं धान्यशतादपि।
प्रासादादपि त्वद्वार्धं शेषाः परविभूतयः।।

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 320।34–38

हे राजन्! जो इस समस्त पृथ्वी का शासन करता देखो वह एक ही नगर में रहता है, उस नगर में भी ए घर में ही विराजता है, घर में रात्रि को एक बिस्तरमा पलङ्गमात्र पर ही लेटता है, केवल इतने स्थान का व उपभोग कर सकता है, एवं सैकड़ों, सहस्रों गोओं व रखते हुए भी राजा सेर भर दूध तथा सैकड़ों सहस्रों अ कोठारों में भी आधा सेर अन्न तुम्हारा होता है, शेष भूमि घर, दूध, अन्न दूसरे की सम्पत्तियाँ हैं, फिर क्यों अभिमा करते हो। इत्यादि विस्तृत उपदेश दिया है पूरा उपदे देखें वैराग्य प्रकरण में।

अरुन्धती ने ऋषियों को धर्मोपदेश दिया–

अरुन्धती उवाच–

वैदिक पुस्तकालय

Scanned with CamScanner

जिन मनुष्यों के पास विपुल धन सम्पत्ति है नित्य सुभूषित अंगों वाले हैं ऐसे देह सुख में रत जनों का शत्रुरहित यह लोक हो जाता है, परलोक नहीं बनता।

जो योगाभ्यासी तप में प्रवृत्त स्वाध्यायशील देह पोषण से दूर हैं, जितेन्द्रिय प्राणियों का वध नहीं करते, उन सज्जनों का परलोक शत्रुरहित हो जाता है।

जो जन प्रथम धर्म का ही आचरण करते हैं और धर्म से समय पर धन प्राप्त करके गृहस्थ बनकर यज्ञों से भजन करते हैं। उनका यह लोक और परलोक दोनों होते हैं, वे उभयलोकी होते हैं।

हितकारी जन सबका प्रियजन–

प्रियाणि लभते नित्यं प्रियदः प्रियकृत् तथा।
प्रिय भवति भूतानामिह चैव परत्र च॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 58।8)

अन्यों का प्रिय चाहने, प्रिय करने, प्रिय देने वाला जन प्रिय वस्तुओं को प्राप्त करता है और प्राणियों का वह इस जन्म तथा पर जन्म में प्रिय बनता है।

गुणवान् जन के गुण एवं गुणवान् बनने के साधन–

अद्रोहः सर्वभूतेषु सन्तोषः शीलमार्जवम्।
तपो दमश्च सत्यं च प्रदानं चेति सम्मितम्॥

(महा०, आश्वमेधिकप० अ० 90।120)

सब प्राणियों के निमित्त द्रोह (वैर) न करना, सन्तोष, शील, सरलता, तप, इन्द्रियदमन, सत्य, दान, ये आठ गुण समान हैं जो मनुष्य को गुणी बनाते हैं।

गुणवान् जन–

ये दम्भान् नाचरन्ति स्म येषां वृत्तिश्च संयता।
विषयांश्च निगृह्णन्ति दुर्गाण्यतितरन्ति ते॥3॥

Scanned with CamScanner

कर्म से निकृष्ट जन्म प्राप्त होता है।

पुण्य जन–

आढ्याश्च बलवन्तश्च यौवनस्थाश्च भारत!।
ये वै जितेन्द्रिया धीरास्ते नराः स्वर्गगामिनः।।

धन, धान्य, सम्पन्न, बलवान् यौवन को प्राप्त और जो जितेन्द्रिय धीर जन हैं, वे स्वर्गगामी सुखविशेष के भागी और भोगने वाले हैं।

आर्य जन–वीर जन–

अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यं रणे राजन्! पलायनम्।।

(महा०, शल्यप० अ० 31।24)

रण में न ठहरना, पलायन कर रण छोड़कर भाग जाना अनार्यों का कार्य है, आर्यों का नहीं। आर्य वीर जन कहलाते हैं वह सिद्ध हुआ।

आर्यां युद्धे मतिं कृत्वा न त्यजन्ति स्म संयुगम्।
यथोत्साहं तु समरे निजघ्नुस्तावकारणे।।

(महा०, भीष्मप० भीष्मवध अ० 86।31)

युद्ध में आर्या मति करके रणक्षेत्र को नहीं छोड़ते समर में उत्साहानुसार दोनों को मार डाला। यहाँ भी आर्या मति वीरता के अर्थ में है अतः आर्य जन वीर जन बनें।

इहलोकी आदि भेद से जनकोटियाँ–

धनानि येषां विपुलानि सन्ति नित्यं रमन्ते सुविभूषिताङ्गाः।
तेषामयं शत्रुवरघ्नलोको नासौ सदा देहसुखे रतानाम्।।
ये योगयुक्तास्तपसि प्रसक्ताः स्वाध्यायशीला जरयन्ति देहान्।
जितेन्द्रियाः प्राणिवधे निवृत्तास्तेषामसौ नामारिघ्नलोकः।।
ये धर्ममेव प्रथमं चरन्ति धर्मेण लब्ध्वा च धनानि काले।
दारानवाप्य क्रतुभिर्यजन्ते तेषामयं चैवपरश्चलोकः।।

(महा०, वनप० मार्कण्डेय० अ० 183। 82–81)

वैदिक पुस्तकालय

Scanned with CamScanner

सुख में या दुःख में रहता हुआ भी जो सद व्यवहार से विचलित न हो वह शास्त्र रूप नेत्र वाला अर्थात् शास्त्र में बुद्धिमान् है।

महान् जन–

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान्॥

(महा०, शल्यप० गदाप० अ० 51।50,
शान्तिप० मोक्ष० अ 323।6)

न वर्षों से अधिक होने से, न श्वेत केश होने से, न धन से, न बन्धुओं से कोई महान् होता है। ऋषियों ने नियम बनाया कि जो अनूचान, पूर्ण विद्वान् वक्ता है वह हमारे में महान् है।

वैदिक पुस्तकालय

पापी जन–

ब्राह्मणं तु समाहूय भिक्षार्थे कृशवृत्तिकम्।
ब्रूयान्नास्तीति यः पश्चात्तं विद्याद् ब्रह्मघातिनम्॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 24।5)

अन्यवृत्तिरहित ब्राह्मण को भिक्षार्थ भोजनार्थ बुलाकर पश्चात् भोजन नहीं है ऐसे कहने वाले को ब्रह्मघाती जानो।

शोचनीय जन–

रागी युक्तः पचमान आत्महेतोर्मूर्खो वक्ता नृपहीनं च राष्ट्रम्।
एते सर्वे शोच्यतां यान्ति राजन्! यश्च राजा स्नेहहीनः प्रजासु॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 290।26)

योगी राग में पड़ जावे, अपने लिए ही पकाने वाला, मूर्ख वक्ता, शासक से रहित राष्ट्र, प्रजाजनों में स्नेह न रखने वाला राजा, ये सब शोचनीय हैं, दोषयुक्त हैं।

Scanned with CamScanner

प्रत्याहुर्नोच्यमाना ये न हिंसन्ति च हिंसिताः।
प्रयच्छन्ति न याचन्ते दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।4।।
वासयन्त्यतिथीन् नित्यं नित्यं ये चानसूयकाः।
नित्यं स्वाध्यायशीलाश्च दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।5।।
ये वा पापं न कुर्वन्ति कर्मणा मनसा गिरा।
निक्षेप्तरो न भूतेषु दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।7।।
यात्रार्थं भोजनं येषां सन्तानार्थं च मैथुनम्।
वाक् सत्यवचनार्थाय दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।8।।

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 110)

जो दम्भ, छल कभी नहीं करते जिनका व्यवहार व्यापार नियमित हैं, विषयों के अधीन नहीं रहते। कुवचन के बदले में मौन रहते हैं, दूसरे के द्वारा पीड़ा पहुँचाए जाने पर उन्हें पीड़ा नहीं पहुँचाते, दान देते हैं, लेने की भावना नहीं रखते, सदा अतिथि सेवा करते हैं नित्य अनिन्दक हैं, सदा स्वाध्याय करते हैं। मन, वाणी, कर्म से पाप नहीं करते, प्राणियों पर प्रहार नहीं करते। जीवन यात्रा के निमित्त भोजन न कि स्वाद व्यसनार्थ, गृहस्थ सम्बन्ध सन्तानार्थ मैथुनार्थ नहीं जिनकी वाणी सत्यभाषणार्थ है, वे ऐसे गुणवान् जन दुःखों, कठिनाइयों को तरते हैं।

शास्त्र अथवा शास्त्रबुद्धि जन–

नित्यं शमपरा ये च तथा ये चानसूयकाः।
नित्यस्वाध्यायिनो ये न दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।

(महा०, अनुशासनप० अ० 31।28)

नित्य, शान्त, अनिन्दक, स्वाध्याय करने वाले वे गुणवान् जन दुःखों कठिनाइयों को तरते हैं।

सुखे तु वर्तमानो वै दुःखे वापि नरोत्तम!।
सुवृत्ताद् यो न चलते शास्त्रचक्षुः स मानवः।।

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ०295।31)

Scanned with CamScanner

सत्सङ्ग और कुसङ्ग का परिणाम–

आश्रम सङ्गति के अनुसार गुण प्रादुर्भाव–

यथा तिलानामिह पुष्पसंश्रयात्।
पृथक् पृथक् याति गुणोऽतिसौम्यताम्॥
तथा नराणां तु विभावितात्मनां।
यथाऽऽश्रमं सत्त्वगुणः प्रवर्तते॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 298।13)

जैसे फूलों के आश्रय सम्पर्क से तिलों का भिन्न-भिन्न गुण सौम्यता को प्राप्त होता है तथा भावनावाले मनुष्यों के अन्दर भी आश्रयानुसार सङ्गति के अनुसार सत्त्वगुण आ जाता है।

तथा–

असतां दर्शनात्स्पर्शात्सञ्जल्पात्सहासनात्।
धर्माचाराः प्रहीयन्ते सिध्यन्ति च न मानवाः॥
बुद्धिश्च हीयते पुंसां नीचैः सह समागमात्।
मध्यमैर्मध्यतां याति श्रेष्ठतां याति चोत्तमैः॥

(महा०, वनप० आरण्यप० अ०। 29-30)

असत्पुरुषों के दर्शन से, स्पर्श से, साथ बैठने से, धर्माचार नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य मानवता को साध नहीं सकते। निकृष्ट नीच जनों के सङ्गत से बुद्धि नष्ट हो जाती है, मध्यमों के सङ्ग से मध्यम हो जाती है और उत्तम श्रेष्ठ जनों के साथ समागम करने से बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है।

Scanned with CamScanner

षष्ठ पार्श्व

राष्ट्रिय-संस्थान

राजधर्म–

प्रजाजनों को राजा पुत्र के समान समझे–

पुत्रा इव पितुर्गेहे विषये यस्य मानवाः।
निर्भया विचरिष्यन्ति स राजा राजसत्तमः॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 57।33)

जिस राजा के देश में प्रजाजन, पिता के घर में पुत्र की भाँति निर्भय विचरते हैं वह राजा राजाओं में उत्तम है।

राजा का धर्माचरण और आस्तिक भाव–

चरेद् धर्मानकटुको मुञ्चेत् स्नेहं न चास्तिक्यम्।
विश्वसेन्नापकारिषु॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 70। 3,7)

राजा सरल होकर धर्माचरण करे, स्नेह और आस्तिकता को न छोड़े, अपकारी जनों का विश्वास न करे।

आचार राजा का बल है–

तथाऽऽचारबलं चैव यस्यात्यन्तसमं नृप॥

(महा०, आश्रमवासिकप० अ० 77।2)

राजन्! आचार भी राजा का बल है जिसके समान अन्य बल नहीं है।

राजा की धर्म-परायणता और जन सेवा–

वर्तितव्यं कुरुश्रेष्ठ! सदा धर्मानुवर्त्तिना।
स्वं प्रियं तु परित्यज्य यद्यल्लोकहितं भवेत्॥
न सन्त्याज्यं च ते धैर्यं कदाचिदपि पाण्डव॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म अ० 56)

हे राजन्! सदा धर्मानुवर्ती रहना, अपना सुख छोड़कर

Scanned with CamScanner

लोकहित साधना और धैर्य को भी न छोड़ना।

राजा का प्रजाजनों में धर्म बनाए रखना–

यं हि धर्मं चरन्तीह प्रजा राज्ञा सुरक्षिताः।
चतुर्थं तस्य धर्मस्य राजा भारत! विन्दति॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 75।6)

राजा द्वारा सुरक्षित हुए प्रजाजन जिस धर्म का आचरण करते हैं उसका चतुर्थांश पुण्य राजा को मिलता है।

राजधर्म तथा राजशास्त्र के रचयिता ऋषि–

एतत्ते राजधर्माणां नवनीतं युधिष्ठिर!
बृहस्पतिर्हि भगवान् न्याय्यं धर्मं प्रशंसति॥
विशालाक्षश्च भगवान् काव्यश्चैव महातपाः।
सहस्राक्षो महेन्द्रश्च तथा प्राचेतसो मनुः॥
भारद्वाजश्च भगवांस्तथा गौरशिरा मुनिः।
राजशास्त्रप्रणेतारो ब्रह्मण्या ब्रह्मवादिनः॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 58। 1-3)

युधिष्ठिर! तेरे लिए यह राजधर्मों का नवनीत है जिस न्याय के धर्म को राजधर्म के आचार्य भगवान् बृहस्पति कथन करते हैं एवं भगवान् विशालाक्ष, काव्य, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज, गौरशिरा ये ब्रह्मवादी ब्राह्मण अर्थात् ऋषि राजशास्त्रों के प्रणेता कथन करते हैं।

राजा या शासक के गुण–

धर्मेण राज्यं विन्देत धर्मेण परिपालयेत्।
धर्ममूलां श्रियं प्राप्य न जहाति न हीयते॥

(महा०, उद्योगप० प्रजागार० अ० 34।31)

राजा राज्य को धर्म से प्राप्त करे और धर्म से उसका रक्षण करे। धर्ममूलक राज्यश्री को प्राप्त करके वह उसे न छोड़ता है, न हीन क्षीण होता है।

Scanned with CamScanner

राजा या शासक के दोष–

अथ येषामधर्मज्ञो राजा भवति नास्तिकः।
न ते सुखं प्रबुध्यन्ति न सुखं प्रस्वपन्ति च॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 62।41)

जिनका राजा धर्मज्ञ न हो और नास्तिक हो वे जन न सुख से जागते हैं और न सुख से सोते हैं।

यस्मात् त्रस्यन्ति भूतानि मृगव्याधान्मृग इव।
सागरान्तामपि महीं लब्ध्वा स नृप हीयते॥

(महा०, उद्योगप० प्रजा० अ० 34।26)

जिस शासक के प्रजाजन ऐसे त्रसित होते हैं जैसे मृगों के पकड़ने वाले व्याध से मृग त्रसित होते हैं तो ऐसा राजा सागर पर्यन्त पृथिवी को भी प्राप्त होकर नष्ट हो जाता है।

राजा सदा दुःखी रहता है–

हतो देशः पुरं दग्धं प्रधानः कुञ्जरो मृतः।
लोकस्तु धारणेष्वेषु मिथ्याज्ञानेन तप्यते॥49॥
अमुक्तो मानसैर्दुःखैरिच्छाद्वेषभयोद्भवैः।
शिरोरोगादिभी रोगैस्तथैवाभिनियन्तृभिः॥50॥
द्वन्द्वैस्तैस्तैस्त्वपहतः सर्वतः परिशङ्कितः।
बहुप्रत्यर्थिकं राज्यमुपास्ते गणयन्निशाः॥51॥
तदल्पसुखमत्यर्थं बहुदुःखमसारवत्।
तृणाग्निज्वलनप्रख्यं फेनबुद्बुदसन्निभम्॥52॥
को राज्यमभिपद्येत प्राप्त चोपशर्म लभेत्॥53॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 320)

देश नष्ट हो गया, नगर जल गया, सबसे उत्तम हाथी मर गया इस प्रकार मिथ्या ज्ञान से इनके अन्दर ममत्व की धारणाओं में राजा या शासक जन दुःखी होता है। इच्छा, द्वेष, भय से उत्पन्न मानसिक दुःखों से राजा घिरा हुआ होता है

Scanned with CamScanner

तथा शिर पीड़ा आदि रोगों से एवं जहाँ तहाँ खींचने वाले उन उन द्वन्द्वों से ताड़ित सब ओर से शङ्कित हुआ, रात्रियाँ चिन्ता में गिनता हुआ अनेक प्रतिकूलतापूर्ण राज्य का सेवन करता है। इस प्रकार थोड़े सुख वाले अर्थहीन बहु दुःखवाले असार जैसे घास की अग्नि के समान अस्थिर फेन के बुद्बुदे के सदृश राज्य को प्राप्त करके कौन है जो शान्ति पा सके, अर्थात् कोई नहीं पा सकता।

न्याय निर्णय में निषिद्ध साक्षी जन–

सामुद्रिकं वणिजं चोरपूर्वं शलाकाधूर्तं च चिकित्सकम्।
अरिं च मित्रं च कुशीलवं च नैतान् साक्ष्येऽधिकुर्वीत सप्त॥

(महा०, उद्योगप० प्रजा० 35)

सामुद्रिक जन, हाथ, मस्तक आदि देखने वाले, व्यापारी पूर्व चोर रहा हुआ, जुए में चतुर और चिकित्सक, शत्रु तथा मित्र गाने आदि में कुशल इन सात को साक्षी न माना जावे।

राजनीति–

राजा या शासक बनाने का प्रयोजन–

राजा चेन्न भवेल्लोके पृथिव्यां दण्डधारकः।
जले मत्स्यानिवाभक्ष्यन् दुर्बलं बलवत्तराः॥

(महा०, शान्तिप० राजध० अ० 67।16)

दण्ड विधायक राजा यदि संसार में न हो तो जल में जैसे मछलियों को अन्य बलवान् जलचर खा जाते हैं ऐसे ही निर्बल को बलवान् खा जावें।

राजा में राजा अभिषिक्त करने का अधिकार नागरिक जनों को–

ते वयं [पौराः 23 से] पाण्डवज्येष्ठं तरुणं युद्धशालिनम्।
अभिषिञ्चाम साध्वद्य सत्यकारुण्यवेदिनम्॥

(महा०, आदिप० जतुगृहपर्व० अ० 143।27)

Scanned with CamScanner

हम नागरिक जन युवा युद्धवीर, सत्यपरायण, दयावान् युधिष्ठिर का आज हर्ष से अभिषेक करते हैं।

अमात्य मण्डल–

वक्ष्यामि तु यथाऽमात्यान् यादृशांश्च करिष्यति।
चतुरो ब्राह्मणान् वैद्यान् प्रगल्भान् स्नातकान् शुचीन्॥
क्षत्रियांश्च तथैवाष्टौ बलिनः शस्त्रपाणिनः॥
वैश्यान् वित्तेन सम्पन्नानेकविंशतिसंख्यया।
त्रींश्च शूद्रान् विनीतांश्च शुचीन् कर्मणि पूर्वके॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 90।15)

अब अमात्य जैसे करने चाहिये यह कहेंगे–चार ब्राह्मण जो वैद्य विद्वान्, वेद स्नातक, पवित्र हों, आठ क्षत्रिय जो बलवान् और शस्त्रधारी हों, इक्कीस वैश्य जो धन-धान्य से सम्पन्न हों, तीन शूद्र जो प्रथम से विनीत पवित्र हों।

अपने छिद्रों को शत्रु तक न पता होने दें–

नात्मच्छिद्रं रिपुर्विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु।
गुहेत्कूर्म इवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः॥

(महा०, शान्तिप० आपद्धर्म० अ० 140।24)

अपने छिद्रों को शत्रु न पाये, दूसरे से छिद्र को तो जान ले। अङ्गों स्वाङ्गों एवं राज्याङ्गों को कछुवे की भाँति गुप्त एवं नियंत्रण में रखे और अपने छिद्रों को भी गुप्त रखे।

शूरान् भक्तान् शिष्टसम्बन्धान् मानिनोनाऽवमानिनः।
विद्याविदो लोकविदः परलोकानुपेक्षकान्।
धर्मे च निरतान् साधूनचलानचलानिव।
सहायान् सततं कुर्याद् राजा भूतिपरिष्कृतः॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 57। 23-25)

शूरवीरों, भक्तों, शिष्ट परिवारवालों, प्रतिष्ठित जनों, अनादर न करने वालों, विद्यावेत्ताओं, व्यवहारवेत्ताओं, परलोकदर्शियों,

Scanned with CamScanner

धर्म में रत रहने वालों, सज्जनों, पर्वत के समान दृढ़ निश्चयी जनों को आत्मिक ऐश्वर्य से सम्पन्न राजा निरन्तर सहायक बनावे।

सीमा में निर्वासित करने योग्य जन–

गुरुतल्पगे च ब्रह्मघ्ने भ्रूणहत्ये तथैव च।
राजद्विष्टे च विप्रस्य विषयान्ते विसर्जनम्॥

(महा०, शान्तिप० राजध० अ० 56। 23, 33)

जब कोई विद्वान् ब्राह्मण की हत्या कर दे, गुरुपत्नी से व्यभिचार कर ले, भ्रूण हत्या कर डाले और राजद्रोह करे तो उसे देश की सीमा में रख दे या निर्वासित कर दे।

अमित्र से भी सन्धि करनी चाहिये–

अमित्रैरपि सन्धेयं प्राणा रक्ष्या हि भारत!।
यो ह्यमित्रैर्नरो नित्यं न सन्दध्यादपण्डितः॥

(महा०, शान्तिप० आपद्धर्म० अ० 138।15)

शत्रु से सन्धि रखनी चाहिये प्राण रक्षा तो करनी ही है, जो मनुष्य शत्रुओं से नित्य अलग रहता है वह अबुद्धिमान् है।

इस विषय में महाभारत में निम्न दृष्टान्त दिया है–

एक व्याध जंगल में वृक्ष के साथ सायं जाल लगाकर घर चला गया कि प्रातः आऊँगा और कोई जङ्गली पशु इसमें फँस जायगा तो उसे ले जाऊँगा। कुछ रात्रि जाने पर एक बिडाल (बिल्ली) वृक्ष की चिड़ियों को खाने आई तो फँस गई और निकालने के लिए व्याकुल हो उठी पर निकल न पाई। इतने में एक चूहा बिल से बाहर निकल कुछ खाने की खोज में घूमने लगा तो देखा कि भूमि पर नेवला है। उसे अपने खाए जाने का भय हुआ, कैसे अपने को बचाऊँ। वृक्ष पर चढ़ने की सोची तो ऊपर उल्लू बैठा दिखलाई पड़ा। जाल

Scanned with CamScanner

में बिल्ली है, अब क्या करूँ, सोचा जाल में बिल्ली के पास चलूँ, नेवला बिल्ली के डर से उसमें न आयेगा और न उल्लू उधर पहुँचेगा, बिल्ली जाल से निकलने को तड़फड़ा रही थी, चूहा जाल में घुसा और बोला– "तुम जाल में फँस गई हो। मैं तुम्हें छुड़ाने आया हूँ, मेरे दाँत नुकीले और पैने हैं। मैं जाल को काट दूँगा, तुम निकल भागना।"

बिल्ली अपने छुटकारे की बात सुनकर प्रसन्न हो गई। चूहे ने कहा– "मैं जाल काटने आया हूँ, पर बाहर नेवला बैठा है वह मुझे खा जायेगा, तुम्हारा जाल न काटने देगा। अतः तुम कुछ देर के लिए अपने बालों में छिपा लो, जब वह चला जावेगा तो मैं जाल काटने बाहर निकल जाऊँगा।"

बिल्ली ने चूहे को बालों में छिपा लिया, रात्रिभर छिपा बैठा रहा, तो जब दिन निकला तो उल्लू को तो दीखना बन्द हो गया, वह तो अन्धा हो गया, व्याध आ पहुँचा, तो उसे देखकर नेवला दौड़ गया, चूहा बिल्ली के बालों से बाहिर आ अपने बिल में घुस गया। इस प्रकार बिल्ली शत्रु थी चूहे की, पर अवसर पर उससे सन्धि कर अपने प्राण बचा लिए।

शत्रु के प्रति मित्रवत् व्यवहार करें–

शत्रुं च मित्ररूपेण सान्त्वनैवाभिसान्त्वयेत्।
स नित्यश्चोद् विजेत्तस्माद्गृहात्सर्पयुतादिव॥

(महा०, शान्तिप० आपद्ध० अ० 141 15)

शत्रु को मित्ररूप मधुर व्यवहार से सन्तुष्ट रखे और उससे नित्य सर्पयुक्त घर की भाँति भय करता रहे–सावधान रहे।

शासक को प्रजाजनों पर आतंक न डालना चाहिये, अन्याय से कोष भी न भरना चाहिये–

Scanned with CamScanner

कच्चित्तेऽपि निरातङ्का वसन्ति विषये तव।
कच्चिन्यायानविच्छिद्य कोशस्तेऽभि पूर्यते॥

(महा०, आश्रमवासिकप० अ० 26।40)

धृतराष्ट्र वनवास में मिलने आए, युधिष्ठिर से पूछते हैं कि कदाचित् तुम्हारे देश में लोग आतङ्क रहित रहते हैं, तुम्हारे आतङ्क-दबाव तो किसी प्रकार का उन पर नहीं और कदाचित् तुम्हरा राज्य कोष अन्याय तो नहीं भरा जाता है।

शासक न मृदु हो, न कठोर, मध्यम हो–

अधर्मो हि मृदू राजा क्षमावानिव कुञ्जरः।
बार्हस्पत्ये च शास्त्रे च श्लोको निगदितः पुरा॥
क्षममाणं नृपं नित्यं नीचः परिभवेज्जनः।
हस्तियन्ता गजस्येव शिर एवारुरुक्षति॥
तस्मान्नैव मृदुर्नित्यं तीक्ष्णो नैव भवेन्नृपः।
वसन्तार्क इव श्रीमान्न शीतो न च घर्मदः॥

(महा०, शान्तिप० राजधर्म० अ० 56।38-41)

बार्हस्पत्य राजनीति विषयक शास्त्र में कहा है कि शासक मृदु हो तो न्यायधर्म से रहित है जैसा कि क्षमावान् हाथी, जैसे हाथी के क्षमावान् होने से हाथी का चलाने वाला उसके शिर पर सवार होता है एवं क्षमावान् शासक पर नीच जन सदा दबाब डालता रहता है, अतः जैसे वसन्त ऋतु में सूर्य न शीत है और न ताप देने वाला है एवं शासक भी न मृदु हो और न कठोर, वह मध्यम हो।

वश में आये शत्रु को न छोड़ना चाहिए–

न शत्रुर्वशमापन्नो मोक्तव्यो वध्यतां गतः।
न्यग्भूत्वा पर्युपासीत वध्यं हन्याद्बले सति॥
अहताद्धि भयं तस्माज्जायते न चिरादिव॥

(महा०, उद्योगप० प्रजा० अ० 38।29)

Scanned with CamScanner

वध करने योग्य वश में आए शत्रु को न छोड़ना चाहिये छिपकर या तटस्थ होकर निरीक्षण करता रहे, जब बल हो तब उसे मार दे। मारे न जाने से शीघ्र किसी भय की सम्भावना है।

शत्रु का विश्वास न करे–

योऽरिणा सह सन्धाय सुखं स्वपिति विश्वसन्।
स वृक्षाग्रे प्रसुप्तो वा पतितः प्रतिबुध्यते।।

(महा०, शान्तिप० आपद्धर्म० अ० 140।25)

जो राजा शत्रु के साथ सन्धि करके विश्वास के साथ सुख से सोता है वह वृक्ष की शाखा पर सोये हुए गिरकर जागने वाले की भाँति दशा वाला होता है।

अरक्षित राजा को प्रजाजन मार दें–

अरक्षितारं हर्तारं विलोप्तारमनायकम्।
तं वै राजकलिं हन्युः प्रजाः सन्नह्य निर्घृणम्।।
अहं वो रक्षितेत्युक्त यो न रक्षति भूमिपः।
स संहत्य निहन्तव्यः श्वेव सोन्माद आतुरः।।

(महा०, अनुशासनप० अ० 61। 32-33)

रक्षा न करने वाले, धन रहने वाले, सताने वाले, भयानक, निर्दय, दुष्ट राजा को प्रजा मिलकर मार दे, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा, ऐसा कहकर जो राजा रक्षा न करे उसे उन्मत्त (पागल) कुत्ते की भाँति मार देना चाहिये।

अयुद्ध से विजय प्राप्ति श्रेष्ठ है–

अयुद्धेनैव विजयं वर्धयेद् वसुधाधिप!
जघन्यमाहुर्विजयं युद्धेन च नराधिप।।

(महा०, शान्तिप० राजध० अ० 94।1)

हे राजन्! जहाँ तक हो युद्ध के बिना ही विजय की वृद्धि करें और युद्ध से प्राप्त विजय निकृष्ट है, निन्दनीय है।

Scanned with CamScanner

राजनीति में छल–

युधिष्ठिर से 'अश्वत्थामा मारा गया' बुलवाकर छल से द्रोणाचार्य को मरवाया–

अश्वस्थामा हतः 'कुञ्जरः'...मनसि निधाय।
धर्मराजस्य तद्वाक्यं नाभिशङ्कितुमर्हसि।।

(महा०, द्रोणप० द्रोणवधप० अ० 192।42)

द्रोणाचार्य को कृष्ण ने छल से मरवाया, अश्वत्थामा द्रोणाचार्य का पुत्र था। उसके मारे जाने पर द्रोणाचार्य अपने शस्त्र छोड़ देगा ऐसा निश्चय था। श्रीकृष्ण ने "अश्वत्थामा मारा गया" ऐसा धर्मराज युधिष्ठिर के मुख से असत्य (छल मिश्रित सत्याभास) बुलवाकर द्रोणाचार्य को मरवाया, धर्मराज युधिष्ठिर ने भी कह दिया कि 'अश्वत्थामा मारा गया' परन्तु झूठ से बचने के लिए मन में 'हाथी' कहा, अश्वत्थामा हाथी मारा गया। बाहर स्पष्ट रूप में द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा मारा गया ऐसा समझा जावे, इसलिए युधिष्ठिर ने प्रकट मुख से न करके मन में हाथी नाम लिया। श्रीकृष्ण ने द्रोणाचार्य से कहा कि 'अश्वत्थामा' मारा गया क्योंकि धर्मराज युधिष्ठिर के वचन में सन्देह नहीं किया जा सकता।

कृष्ण ने छल का युद्ध में प्रयोग किया–

नैष शक्यः कदाचित्तु हन्तुं धर्मेण पार्थिव!।
ते भीष्मप्रमुखाः सर्वे महेश्वासा महारथाः।।
ममाऽनेकैरुपायैस्तु मायायोगेन चासकृत्।
हतास्ते सर्व एवाऽजौ भवतां हितमिच्छता।।
यदि नैवंविधं जातु कुर्यां जिह्ममहं रणे।।
कुतो वो विजयो भूयः कुतो राज्यं कुतो धनम्।

Scanned with CamScanner

तथैवायं गदापाणिर्धार्तराष्ट्रोऽतिरथा भुवि।
न शक्यो धर्मतो हन्तुं लोकपालैरपि स्वयम्॥

(महा०, शल्यप० गदाप० अ० 61। 62-64, 66)

कृष्णजी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! धर्म से युद्ध करते हुए यह कभी मारा नहीं जा सकता, अथवा वे भीष्म पितामह आदि महावीर योद्धा नहीं मारे जा सकते, मैंने ही युद्ध में अनेक छल प्रयुक्त उपायों से अनेक बार इन्हें मारा, आप लोगों के हितार्थ, यदि मैं इस प्रकार छल न करूँ तो कैसे विजय हो, और तुम्हारा कैसा राज्य और कैसा धन? इसी प्रकार यह गदा हाथ में लिए दुर्योधन भी पृथ्वी पर अत्यन्त योद्धा है जो धर्म से लोकपालों से भी नहीं जीता जा सकता।

शस्त्र अस्त्र–

अस्त्रों के तीन भेद–

दैवं ब्राह्मं मानुषं च सयत्नं सचिकित्सतम्।
सर्वास्त्राणां प्रयोगं च अभिजानन्ति कृत्स्नशः॥

(महा०, वनप० अर्जुनाभिग० अ० 37।5)

दैव (देवों सूर्यकिरणों, विद्युत्-आदि के अस्त्र), ब्राह्म (खनिज पदार्थों से बने बम आदि अस्त्र), मानुष (मनुष्यों द्वारा पास-पास फेंके जाने वाले बाण आदि अस्त्र), ये तीन फेंकने तथा प्रतीकार सहित एवं सब अस्त्रों के प्रयोग को सम्पूर्ण रूप से जानते हैं।

नारायण अस्त्र–

प्रावात्सपृषतो वायुरनभ्रे स्तनयित्नुमान्।
चचाल पृथिवी चापि चक्षुभे च महोदधिः॥
प्रतिस्रोतः प्रवृत्ताश्च गन्तुं तत्र समुद्रगाः।
शिखराणि व्यशीर्यन्त गिरीणां तत्र भारत!॥

(महा०, द्रोणप० नारायणास्त्र मोक्षप० अ० 196। 1-3)

Scanned with CamScanner

नारायण अस्त्र के छोड़ने से बिना अभ्र के गड़गड़ाहट वाला चिनगारियों सहित वायु वेग से प्रवाहित हो पड़ा, पृथ्वी काँप उठी, समुद्र क्षुब्ध हो गया, नदियाँ उलटी ऊपर को लौट गईं और पर्वतों के शिखर टूटकर गिर पड़े।

ऐन्द्र आदि अस्त्र–

ऐन्द्रं पाशुपतं त्वाष्ट्रं वायव्यमथ वारुणम्।
मुक्तं मुक्तं द्रोणाचार्यात् तज्जघान धनंजयः॥

(महा०, द्रोणप० द्रोणवध० अ० 188।31-32)

ऐन्द्र (विद्युत् का अस्त्र), पाशुपत (खनिज का अस्त्र), त्वाष्ट्र (सूर्य किरणों का सौर अस्त्र), वायव्य (वायु का अस्त्र), वारुण (वाष्प फेंकने तथा वर्षा करने वाले अस्त्र), द्रोणाचार्य से फेंके हुए इन अस्त्रों को अर्जुन ने नष्ट कर दिया।

अग्नि वर्षा आदि करने वाले आग्नेय आदि अस्त्र–

आग्नेयेनासृजद् वह्निं वारुणेनासृजत् पयः।
वायव्येनासृजद् वायुं पार्जन्येनासृजद् घनान्॥
भौमेन प्राविशद् भूमिं पार्वतेनासृजद् गिरीन्।
अन्तर्धानेन चास्त्रेण पुनरन्तर्हितोऽभवत्॥

(महा०, आदिप० सम्भव० अ० 137। 19-20)

अर्जुन ने आग्नेय अस्त्र से अग्नि छोड़ी, बरसाई, वारुण अस्त्र से जल छोड़ा, बरसाया, वायव्य अस्त्र से वायु की आँधी बहाई, पार्जन्य अस्त्र से मेघों को फैलाया, भौम अस्त्र से भूमि में प्रविष्ट हुआ या किया, पार्वत अस्त्र से टीलों, छोटे पर्वतों को भूमि से ऊपर उभार दिया, अन्तर्धान अस्त्र से अन्तर्धान हो गया।

तामस् और भास्कर अस्त्र का प्रयोग–

प्रादुश्चक्रे महामायां तामसीं परतापनाम्।

Scanned with CamScanner

ततस्ते तमसा सर्वे वृताश्चासन् महीपते।।
नाभिमन्युमपश्यन्त नैव स्वान् न परान् रणे।
अभिमन्युश्च तद्दृष्ट्वा घोररूपं महत्तमः।।
प्रादुश्चक्रेऽस्त्रमत्युग्रं भास्करं कुरुनन्दन!।
ततः प्रकाशमभजज्जगत् सर्वं महीपते।।

(महा०, भीष्मप० भीष्मवध० अ० 10। 23-25)

परपीड़क तामसी माया प्रकट की (तामस-अन्धकार फैलाने वाला अस्त्र चलाया) तब सब अन्धकार युक्त कर दिए गए, अभिमन्यु को न देखा और न अपनों विगानों को देखा, अभिमन्यु ने उस घोर रूप को देखकर अत्युग्र भास्कर (सौर अस्त्र) को प्रकट किया जिससे सब जगत् ने प्रकाश को पाया।

विनाशकारी वायव्य अस्त्र–

मुमोचास्त्रं महाराज वायव्यं पृतनामुखे।
प्रादुरासीत् ततो वायुः क्षोभयानो नभस्तलम्।।
पातयन् वै तरुगणान् निघ्नंश्चैव सैनिकान्।।
ततो द्रोणोऽभिवीक्ष्यैव वायव्यास्त्रं सुदारुणम्।।
शैलमन्यन्महाराज! घोरमस्त्रं मुमोच ह।
द्रोणेन युधि निर्मुक्ते तस्मिन्नैव नरोत्तम्।।

(महा०, भीष्मप० भीष्मवध अ० 102।18)

पुनः वायव्य अस्त्र को फेंका उससे आकाश मण्डल क्षुब्ध करता हुआ, वृक्षों को गिराता हुआ, सैनिकों को मारता हुआ और वायु प्रकट कर रहा था। पुनः द्रोणाचार्य ने उस वायव्यास्त्र को देख शैल अस्त्र फेंका।

ब्रह्मशिरः–अस्त्र से बारह वर्ष वर्षा नहीं होती, उसे न छोड़ना चाहिये–

Scanned with CamScanner

अस्त्रं ब्रह्मशिरो यत्र परमस्त्रेण वध्यते।
समा द्वादश पर्जन्यस्तद्राष्टं नाभिवर्षति॥
एतदर्थं महाबाहुः शक्तिमानपि पाण्डव!।
न विहन्यात्तदस्त्रं तु प्रजाहितचिकीर्षया॥

(महा०, सौप्तिकप० अ० 16। 23-24)

ब्रह्मशिर अस्त्र के आघात से बारह वर्ष मेघ उस राष्ट्र में नहीं बरसता है, इसलिए हे अर्जुन! जनहित को भावना से उस अस्त्र को न छोड़ना।

अस्त्रं ब्रह्मशिरस्तात! विद्वान् पार्थो धनञ्जयः।
उत्सृष्टवान्न रोषेण न नाशय तवाहवे॥

(महा०, सौप्तिकप० अ० 15।19)

अर्जुन ने ब्रह्मशिर अस्त्र को जानते हुए भी क्रोध में आकर तेरे नाश के लिए नहीं छोड़ा।

यत्र राजा च राज्ञश्च पुरुषाः प्रत्यनन्तराः।
कुटुम्बिनामग्रभुजस्त्यजेत्तद्राष्ट्रमात्मवान्॥
श्रोत्रियस्त्वमग्रभोक्तारो धर्मनित्याः सनातनाः।
याजनाध्यापने युक्ता यत्र तद्राष्ट्रमावसेत्॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 287।48, 49)

जिस राष्ट्र में राजा और राज कर्मचारी ऊपर से नीचे तक सब कुटुम्बियों से पूर्व खाने वाले हों, साभिमान एवं आत्म ज्ञानी उस राष्ट्र को छोड़ दे। जिस राष्ट्र में वेदवेत्ता, धर्मपरायण, निरन्तर यज्ञ कराने और पढ़ाने में लगे हुए, पूर्व खाने वाले हों उस राष्ट्र में बसना चाहिए।

सुरापान का राष्ट्र में निषेध–

आघोषयंश्च नगरे वचनादाहुकस्य ते।
जनार्दनस्य रामस्य बभ्रोश्चैव महात्मनः॥
अद्यप्रभृति सर्वेषु वृष्ण्यन्धककुलेष्विह।

Scanned with CamScanner

सुरासवो न कर्तव्यः सर्वैर्नगरवासिभिः।।
यश्च नो विदितं कुर्यात् पेयं कश्चिन्नरः क्वचित्।
जीवन् स शूलमारोहेत् स्वयं कृत्वा सबान्धवः।।
(महा०, मौसलप० अ० 1। 30, 31)

व्यवस्थापकों ने आहुक कृष्ण बलराम बभ्रु के आदेश से नगर में घोषित कर दिया कि आज से सब वृष्णि अन्धक कुलों में सुरा और आसव कच्चा, पक्का, मद्य (शराब) न बनाना चाहिये तथा सब नगरवासी भी न बनावें और जिस किसी मनुष्य का पता चल गया कि वह सुरापान करता है तो उसे परिवार सहित जीवित शूली पर चढ़ना होगा।

दण्ड के योग्य जन–

परस्य दण्डं नोद्यच्छेत् क्रुद्धो नैनं निपातयेत्।
अन्यत्र पुत्राच्छिष्याच्च शिक्षार्थं ताडनं स्मृतम्।।
(महा०, अनुशासनप० अ० 104।37)

पुत्र और शिष्य को छोड़कर दूसरे पर दण्ड न उठावे और न क्रुद्ध होकर दण्ड दे, पुत्र और शिष्य को ताड़ना तो शिक्षा के लिए करना ही है।

दण्ड से विद्या प्रचार–

न विद्यां प्राप्नुयात् कश्चिद् यदि दण्डो न पालयेत्।
(महा०, शान्ति० राजध० अ० 15।40)

यदि दण्डविधान न हो तो कोई विद्या भी न पढ़े। विद्या का दान किन्हीं अंशों में अनिवार्य होना चाहिए, नियम के उल्लंघन में दण्ड देना चाहिए।

भारतवर्ष–

इदं तु भारतं वर्षं ततो हैमवतं परम्।
हेमकूटात् परं चैव हरिवर्षे प्रचक्षते।।
(महा०, भीष्मप० जम्बूखण्ड निर्माण अ० 6।7)

Scanned with CamScanner

यह हिमालय तक भारतवर्ष है, आगे हैमवत, हेमकूट, हिमालय प्रदेश की चोटी से परले देश को हरिवर्ष कहते हैं।

देशान्तर–

सन्ति नित्यहिमा देशा निर्वृक्षमृगपक्षिणः।
सन्ति कचिन्महादर्यो दुर्गाः केचिद् दुरासदः॥

(महा०, आदिप० सम्भवप० अ० 120।13)

"सदा बर्फ वाले देश हैं, जहाँ वृक्ष पक्षी भी नहीं होते, कहीं-कहीं बड़ी-बड़ी घाटियाँ दुर्गम्य और दुर्निवास हैं।" ऐसे स्थानों, देशों में भी आर्यों का गमन हो चुका था।

देशदेशान्तर यात्रा–

स तं ब्राह्मणा श्रिया युक्तं ब्रह्मणातुल्यवर्चसम्।
मेने पुत्रं यदा व्यासो मोक्षधर्मविशारदम्॥5॥
उवाच गच्छेति तदा जनकं मिथिलेश्वरम्।
स ते वक्ष्यति मोक्षार्थं निखिलं मिथिलेश्वरः॥6॥
मेरोर्हरश्च द्वे वर्षे वर्षं हैमवतं ततः।
क्रमेणैव व्यतिक्रम्य भारतं वर्षमासदत्॥14॥
स देशान् विविधान् पश्यंश्चीनहूणनिषेवितान्।
आर्यावर्तमिमं देशमाजगाम महामुनिः॥15॥
पितुर्वचनमाज्ञाय तमेवार्थं विचिन्तयन्।
अध्वानं सोऽतिचक्राम खचरः खेचरन्निव॥16॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष अ० 326।29)

अमेरिका से व्यास ऋषि ने अपने पुत्र शुकदेव को मोक्षधर्म का उपदेश लेने के लिए भारत में मिथिलापुरी में जनक के पास भेजा। यात्रा के उन-उन देशों का क्रमशः वर्णन है–

व्यास ऋषि ने ब्राह्मीश्री से युक्त ब्रह्मतुल्य, तेजवाले अपने पुत्र शुक्रदेव को मोक्षधर्म में विशारद, प्रवीण समझा

Scanned with CamScanner

और उसे कहा कि मिथिला के राजा जन के पास जा, वह तुम्हारे लिए समस्त मोक्षविषय को बतलायेगा।। यह सुनकर शुकदेव मिथिला को चल पड़े। मार्ग में मेरुवर्ष और हरिवर्ष इन दो देशों को पुनः हैमवत देश को क्रमशः लाँघकर भारतवर्ष में आये एवं वह चीन हूण जनों से सेवित भिन्न-भिन्न देशों को देखते हुए आर्यावर्त देश में आये। पिता के वचन को मानकर उसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उड़ते हुए पक्षी की भाँति आकाश मार्ग से यात्रा की।

राष्ट्र की पशुसम्पत्ति गायें–

रामराज्य में गायों की स्थिति–

सर्वा द्रोणदुघा गावो रामे राज्यं प्रशासति।

(महा०, शान्ति० प० राजध० अ० 29।58)

राम के राज्य काल में सारी गौएँ मन भर दूध देने वाली थीं।

गौओं का स्थान राष्ट्र में सब धनों से ऊँचा है–

च्यवन ऋषि गङ्गा, यमुना के सङ्गम के जल में बारह वर्ष से तप कर रहे थे, मछुओं ने जाल डाला तो मछलियों के साथ च्यवन ऋषि भी जाल में आ गये, मछुए उस समय के राज नहुष के पास च्यवन को ले गये। राजा ने च्यवन को कहा कि मैं आपका स्वागत करना चाहता हूँ। च्यवन ऋषि ने कहा कि इन मछुओं को मेरा मूल्य दे दो। नहुष सहस्र रुपये देने लगे। च्यवन ने कहा–"बुद्धि से सोचकर दो।" नहुष लक्ष रुपये देने लगे। च्यवन बोले–"अमात्यों से सम्मति करके दो।" नहुष करोड़ रुपये देने लगे। च्यवन ने कहा–"ब्राह्मणों से पूछकर दो।" नहुष ब्राह्मणों से पूछ अर्धराज्य देने लगे, च्यवन ने कहा, "ऋषियों से पूछकर दो।"

नहुष चिन्ता में पड़ गये तो एक ऋषि ने कहा कि गौएँ

Scanned with CamScanner

दी जावें। च्यवन ने स्वीकार किया, इस प्रकार गौ राष्ट्र की जनता की अमूल्य सम्पत्ति है। कहा भी है–

कीर्तनं श्रवणं दर्शनं चापि पार्थिव!
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 51।10)

राजन्! गौओं का गुणवर्णन, श्रवण और दर्शन, सब दोषों को दूर करने वाला तथा कल्याणकर एवं प्रशंसनीय है।

राष्ट्र में धन की अनिवार्य आवश्यकता–

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः।
यस्यार्थाः स पुमान् लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः॥

(महा०, शान्ति प० राजधर्मानु० अ० 8।14)

जिसके पास धन आदि सम्पत्ति साधन हैं उसके मित्र होते हैं, बान्धव होते हैं और वह संसार में श्रेष्ठ पुरुष तथा बुद्धिमान् माना जाता है।

वैदिक पुस्तकालय
वैदिक पुस्तकालय

Scanned with CamScanner

सप्तम पार्श्व

शिष्टाचार-व्यवहार-संस्थान

शिष्टाचार–

जिस सम्बन्ध में अन्य की निन्दा करे देखे वह अपने में तो नहीं–

परेषां यदसूयेत न तत्कुर्यात् स्वयं नरः।
यो ह्यसूयुस्तथायुक्तः सोऽवहासं नियच्छति॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 290।24)

दूसरे के प्रति जिस सम्बन्ध में निन्दा करे उसे स्वयं न करे जो अपने अन्दर वर्तमान हुए उस दोष को अन्य में होने पर निन्दा करता है वह उपहास को प्राप्त होता है।

पुरीषं यदि वा मूत्रं ये न कुर्वन्ति मानवाः।
राजमार्गे गवां मध्ये धान्य मध्ये च ते शुभाः॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 193।3)

जो मनुष्य राजमार्ग में, गौओं के मध्य में, धान्य में, धान्यवाले खेत में मलमूत्र नहीं त्यागते हैं वे मनुष्य शुभ हैं, शिष्ट हैं।

सोने का शिष्टाचार–

अनायुष्यं दिवास्वप्नं तथाभ्युदितशायिता।
प्रगे निशामाशु तथा नैवोच्छिष्टाः स्वपन्ति वै॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 104।139)

दिन में सोना तथा सूर्योदय पर सोना, सायंकाल ही सोना आयु घटानेवाले हैं एवं उच्छिष्ट भी नहीं सोना चाहिये।

Scanned with CamScanner

वृद्धों, बड़ों का सत्कार–

ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर आयति।
प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते॥
(महा०, उद्योगप० प्रजा० अ० 38॥)

वृद्धजन के आने पर छोटे के प्राण उखड़ जाते हैं, स्वागत के लिए उठने और अभिवादन करने से वह पुनः उन्हें प्राप्त कर लेता है।

दैनिक शिष्टाचार–

मातापितरमुत्थाय पूर्वमेवाभिवादयेत्।
आचार्यमथवाप्यन्यं तथायुर्विन्दते महत्॥43,44॥
न भग्ने नावशीर्णे च शयने प्रस्वपीत च।
नान्तर्धाने न संयुक्ते न च तिर्यक् कदाचन॥49॥
न नग्नः कर्हिचित् स्नायान्न निशायां कदाचन।
स्नात्वा च नावमृज्येत गात्राणि सुविचक्षणः॥51॥
न चैवार्द्राणि वासांसि नित्यं सेवेत मानवः।
नोत्सृजेत पुरीषं च क्षेत्रे ग्रामस्य चान्तिके॥52॥
उभे मूत्रपुरीषे तु नाप्सु कुर्यात् कदाचन।
निषण्णश्चापि खादेत न तु गच्छन् कदाचन॥54॥
मूत्रं नोत्तिष्ठता कार्यं न भस्मनि न गोव्रजे।
आर्द्रपादस्तु भुञ्जीत नार्द्रपादस्तु संविशेत्॥60॥
आर्द्रपादस्तु भुञ्जानो वर्षाणां जीवते शतम्॥
अभिवादयीत वृद्धांश्च दद्याच्चैवासनं स्वयम्॥66॥
कृताञ्जलिरुपासीत गच्छन्तं पृष्ठतोऽन्वियात्।
नैकवस्त्रेण भोक्तव्यं न नग्नः स्नातुमर्हति॥67॥
स्वपतव्यं नैव नग्नेन न चोच्छिष्टोऽपि संविशेत्।
केशग्राहं प्रहारांश्च शिरस्येतान् विवर्जयेत्॥68॥

Scanned with CamScanner

वाते च पूतिगन्धे च मनसाऽपि न चिन्तयेत्।
गुरुणा चैव निर्बन्धो न कर्तव्यः कदाचन॥80॥

(महा०, अनुशासनप० अ० 104)

प्रथम ही उठकर माता-पिता को तथा आचार्य को या अन्य मान्यों को प्रणाम करे। टूटे हुए और पुराने पलंग आदि पर न सोए, न अन्धकार में पड़े (झिगरे) पर न मिले हुए पर कभी न सोए। न कभी नंगा, न कभी रात्रि में स्नान करे। न स्नान करके अंगों को संशोधन या उबटना, मर्दन आदि करे और न गीले वस्त्रों को पहने, मल को अन्न के खेत में ग्राम के पास में भी न छोड़े, जलों में भी मूत्र और और पुरीष न करे। बैठकर खावे, चलते हुए नहीं। खड़े होकर मूत्र न करना, न भस्म और गोशाला में, पैर गीले करके भोजन करे, गीले पैर सोए नहीं, गीले पैर खाता हुआ सौ वर्ष जीता है। बड़ों को प्रणाम करे और उन्हें स्वयं आसन दे, हाथ जोड़कर खड़ा रहे, जाते हुए पीछे चले। एक वस्त्र पहन खाना न चाहिए और न नंगा स्नान करे, नंगा न सोना चाहिए, और न जूठे मुख सोए। केश पकड़कर झगड़ना न चाहिए, और शिर में मारना भी नहीं चाहिए। दुर्गन्ध वायु में मन से चिन्तन न करना चाहिये। गुरु के साथ कभी वैर न रखना चाहिये।

गुरु के प्रति शिष्टाचार–

नाभुक्तवति चाश्नीयादपीतवति नो पिबेत्।
नातिष्ठति तथाऽऽसीत नासुप्ते प्रस्वपेत च॥
उत्तानाभ्यां च पाणिभ्यां पादावस्य मृदु स्पृशेत्।
दक्षिणं दक्षिणेनैव सव्यं सव्येन पीडयेत्॥
अभिवाद्या गुरुं ब्रूयाद्धीष्व भगवन्निति॥

(महा०, शान्तिप० मोक्ष० अ० 242। 21, 23)

Scanned with CamScanner

वैदिक
साहित्य
pdf मे प्राप्त
करने के लिए
टेलीग्राम
एप्लिकेशन
मे वैदिक
पुस्तकालय
या
vaidicbooks
सर्च करें

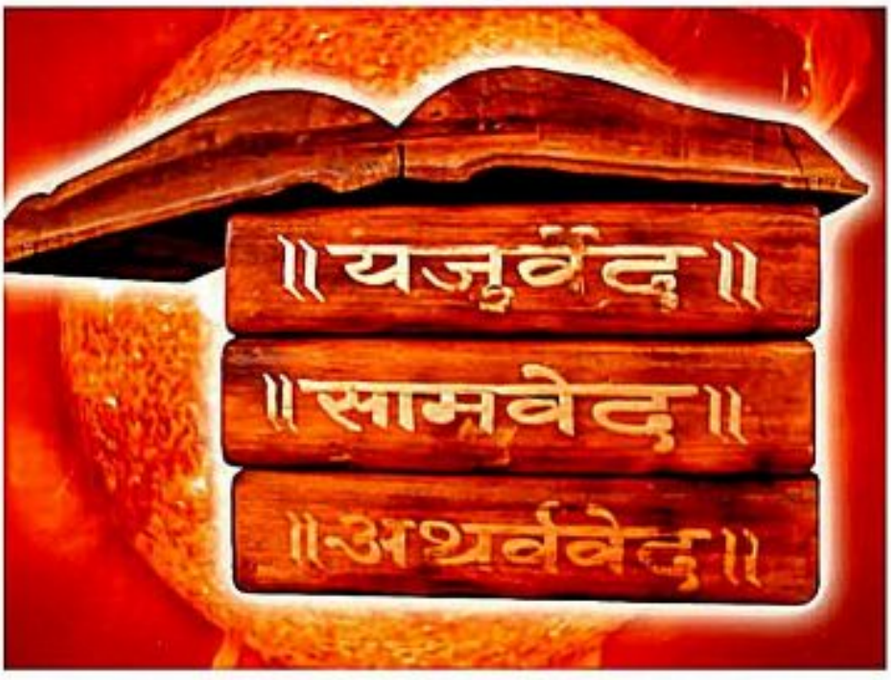

Scanned with CamScanner